विश्व न्याय मंदिर

रिज़वान 2003

विश्व के बहाइयों को

परम प्रिय मित्रगण,

पाँच वर्षीय योजना जब अपने तीसरे साल में प्रवेश करती है तब हम पाते हैं कि विकास गति पकड़ रहा हैः अभी-अभी समाप्त हुये वर्ष के दौरान प्राप्त उपलब्धियों का रेकार्ड पहले के बारह महीनों की उपलब्धियों को पीछे छोड़ गया है। इस गति ने योजना के मौलिक तत्वों के बीच स्थापित एकजुटता से उतनी ही शक्ति पाई है जितनी पूरी धरती पर व्याप्त अशांति की भावना को भड़काने वाले प्रभाव से।

इस नये प्रशासनिक वर्ष के प्रारम्भ में जो परिस्थितियां हैं वे महत्व की दृष्टि से निर्णायक, चुनौती भरी और असाधारण हैं। पिछले पूरे साल एक-के-बाद एक संकटों का जो दौर चला वह मध्य-पूर्व में युद्ध छिड़ जाने पर आकर ठहरा। उथल-पुथल से भरे परिवर्तन की पीड़ा में उभर रहे विश्व-समाज में इसके परिणाम परम महान नाम के समुदाय की प्रगति के लिये कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। आवश्यक कारणों से, इस परिवर्तन का समय, पैमाना और स्वभाव पहले से बताने योग्य नहीं रहा है। सच, विश्व की अवस्थाओं के बहाव में वर्तमान परिवर्तन कितनी तेजी से हुआ है! जो युद्ध हुआ उसमें वे देश स्पष्ट रूप से शामिल थे जहाँ प्रभुधर्म के प्रारम्भिक इतिहास ने आकार ग्रहण किया था। इस युद्ध ने बहाउल्लाह की इस चेतावनी की याद ताज़ा कर दी कि "इस सर्वमहान्, इस नई विश्व व्यवस्था के जीवंत प्रभाव से विश्व का संतुलन अस्त-व्यवस्त हो गया है"। यह ख़ास तौर से ध्यान देने योग्य है कि इस संकट की घटनाओं ने इराक के साथ-साथ बहाई इतिहास को भी सीधे प्रभावित किया है।

इस कारण तथा अन्य परिस्थितियों की वज़ह से दुनिया में हुये विघटन, एक तरह से, उस देश के अत्यन्त महत्वपूर्ण, किन्तु पीड़ादायक रूप से संत्रस्त बहाई समुदाय के इतिहास में एक नये अध्याय की शुरूआत का संकेत देते हैं, जहाँ इस युग के ईश्वरीय अवतार ने पूरे एक दशक तक निवास किया था। दूसरी ओर, इन विघटनों ने हमारे धर्म के विश्व केन्द्र में नौवें अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन की तैयारियों को झटका पहुँचाया है। लेकिन, ये घटनायें, चाहे कितनी भी निराशाजनक रही हों इनसे हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। जब ईश्वर की महान योजना उसकी लघु योजना की राह में आती है तो इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिये कि कालांतर में उसके महिमाशाली धर्म के हितों को आगे बढ़ाने के बहुमूल्य अवसर ईश्वर की कृपा से मिलेंगे।

लघु शांति की स्थापना की राह में हाल के युद्ध द्वारा उत्पन्न किये गये इन दुःखों, भय और परेशानियों ने बार-बार आने वाले ऐसे संकट पर दुनिया भर में रोष की भावना को गहराया है। पूरी दुनिया में लोगों की चिन्तायें अब खुले तौर पर क्रोध से भरे प्रदर्शनों में देखी जा सकती हैं, जिसकी अनदेखी हम नहीं कर सकते। ऐसे जन-प्रदर्शनों के माध्यम से जिन मुद्दों का विरोध वे करते हैं या जैसी भावनायें भड़काते हैं वे अक्सर अव्यवस्था और उलझन ही बढ़ाती हैं। जो कुछ भी हो रहा है उसके लिये ईश्वर के मित्रों के सामने एक सुस्पष्ट व्याख्या है; इस दुःख और निराशा के फैलने से उत्पन्न चुनौतियों के प्रति अगर वे प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी बातें रखना चाहते हैं तो उन्हे केवल प्रभुधर्म द्वारा दी गई दृष्टि और इसके सिद्धांतों का ध्यान करना चाहिये। उन शिक्षाओं का उन्हें गहराई से अध्ययन करना चाहिये जो प्रासंगिक हैं और उन्हे ''वर्ल्ड ऑर्डर ऑफ बहाउल्लाह'' नामक पुस्तक में प्रकाशित शोगी एफेंदी के पत्रों का अध्ययन करना चाहिये, खास तौर से जो ''द गोल ऑफ ए न्यू वर्ल्ड ऑर्डर'', ''अमेरिका एंड द मोस्ट ग्रेट पीस'' और ''द अनफोल्डमेंट ऑफ वर्ल्ड सिविलाइजेशन'' शीर्षक के अन्तर्गत हैं।

एक ओर विश्व अपने उग्र दौर से गुज़र रहा है, वहीं दूसरी ओर पाँच वर्षीय योजना ने समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने के अपने प्रमुख लक्ष्य के प्रति हमारे समुदाय को वह परिचालन क्षमता दे दी है कि हम इस ओर ऊँची छलांग लगा सकें। 17 जनवरी के हमारे पत्र में सभी पाँच महाद्वीपों में प्रभुधर्म के उत्साहवर्धक क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है; हम चाहते हैं कि आप इसका गहन अध्ययन करें। अब केवल कुछ प्रमुख बातों को रेखांकित करने की ज़रूरत हैः 179 देशों में समुदाय-समूहों के विभाजन का काम पूरा कर लिया गया है; प्रसार के कोई 17,000 आधार तैयार कर लिये गये हैं। संस्थाओं और समुदायों के बीच विचारों और कार्य की एकरूपता के लिये समुदाय-समूहों के स्तर पर समीक्षा बैठकें एक सशक्त साधन बनी हैं; परस्पर सहयोग और समर्थन की भावना से संस्थागत और व्यक्तिगत पहल को प्रभावशाली प्रोत्साहन मिला है। प्रसार और सुगठन के लिये संस्थान-प्रक्रिया पहले से अधिक स्पष्ट ढंग से जीवनदायी शक्ति सिद्ध हुई है। पिछले साल की तुलना में इस साल योजना के मूल क्रियाकलाप काफी बड़े पैमाने पर सम्पादित किये गये। परिणामस्वरूप, दुनिया भर में अब बढ़ती हुई संख्या में मित्रगण शिक्षण और प्रशासनिक कार्यों में सक्रिय हैं; जिनसे उनके प्रयासों के प्रति विश्वास और उत्साह को बल मिलता है। समुदाय के कार्यक्रमों में युवा और बच्चों को अधिक सुव्यस्थित ढंग से शामिल किया गया है और स्टडी सर्कल, भक्तिपरक बैठकों तथा बच्चों की कक्षाओं में अब गैरबहाई अधिक संख्या में शामिल होने लगे हैं। सच में, यह देखकर ख़ुशी होती है कि योजना के आरम्भ से अब तक की इस छोटी-सी अवधि में ये क्रियाकलाप अब बड़ी संख्या में और नियमित रूप से संचालित किये जा रहे हैं, जब कि आरम्भ में कभी-कभी हुआ करते थे। यह है एक विश्व समुदाय द्वारा प्रगति-पथ पर अपना ध्यान केन्द्रित करने का एक लघु चित्र जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था।

पिछले साल योजना के संचालन में जब विकास का यह ढाँचा अधिक मजबूती से स्थापित हो रहा था तब अन्य महत्वपूर्ण बातें भी हो रही थीं। प्रभुधर्म के बाहरी मामलों के क्षेत्र में, बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की एजेंसियां इतने प्रकार के कामों में लगी थीं और इतने विविध कार्य कर रही थीं कि सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता, लेकिन इन सब का मिला-जुला प्रभाव इतना मोहक है कि बिना कुछ कहे इसे छोड़ा भी नहीं जा सकता। इन क्रियाकलापों में विशेष रहा वह संदेश जो हमने पिछले साल अप्रैल महीने में विश्व के धार्मिक नेताओं को सम्बोधित किया था। इसने विश्व-शांति सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रति समाज के सर्वाधिक प्रभावशाली तत्वों का ध्यान आकर्षित करने के लिये बहाई समुदाय द्वारा की जा रही पहल को एक नई प्रेरणा दी। बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के जन-सूचना कार्यालय के प्रयासों और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की तत्पर कार्यकुशलता के कारण यह संदेश कम ही समय में पूरी दुनिया में दूसरे धार्मिक समुदायों के उच्चाधिकारियों और वर्गों के बीच वितरित किया गया। इस पहल का उद्देश्य यह था कि सभी सम्बद्ध लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जा सके कि धार्मिक नेतृत्व प्रदान कर रहे लोगों के लिये तत्काल यह आवश्यक है कि धार्मिक पूर्वाग्रह की समस्या को समझें जो मानव-कल्याण के लिये धीरे-धीरे एक अधिक गहरा संकट पैदा कर रहा है। संदेश पाने वालों में अनेक लोगों की तात्कालिक प्रतिक्रिया इस बात का संकेत देती है कि संदेश को गम्भीरता से लिया जा रहा है और कुछ जगहों में तो इस संदेश के कारण अन्तर्धर्म गतिविधियों के प्रति एक नई दृष्टि भी मिली।

सामाजिक और आर्थिक विकास के क्षेत्र में एक रफ्तार पा ली गई है जो समुदाय के आन्तरिक विकास और दूसरों के साथ सहयोग के लिये संस्थागत और व्यक्तिगत स्तर पर किये जो रहे प्रयासों के प्रभाव को अधिक गहराई से प्रदर्शित करती है। सामाजिक-आर्थिक विकास के कार्यालय ने रिपोर्ट दी है कि योजना के दूसरे साल के दौरान आठ नई बहाई-प्रेरित एजेंसियां स्थातिप की गईं, जो महिला-विकास, स्वास्थ्य, कृषि, बाल-शिक्षा और युवा-सशक्तिकरण जैसे विविध क्षेत्रों में संचालित की जा रही हैं।

पवित्र भूमि में, बहाउल्लाह की अरबी में लिखी पाती जवाहिरूल-असरार के अंग्रेज़ी अनुवाद का "जेम्स ऑफ डिवाइन मिस्ट्रीज़" शीर्षक से विमोचन किया गया। अक्का के कारागार में बहाउल्लाह के कक्ष के जीर्णोद्धार का काम पूरा किया गया और इस कैदखाने की ऊपरी छत के बाकी बचे हिस्सों को ठीक करने का काम शुरू हुआ। अक्तूबर, 2003 में शुरू होने वाले तीर्थयात्रियों के जत्थो में अब 150 के स्थान पर हर एक दल में 200 तीर्थयात्रियों के आने की व्यवस्था की जा रही है।

इसके अलावा, विश्व केन्द्र में काम कर रही संस्थाओं के विकास को तेज करने की कोशिशों में हुक़ूक़ुल्लाह (ईश्वर का अधिकार) की संस्था का इसके न्यासी, धर्मभुजा अली मुहम्मद वर्ग़ा की विशेष देख-रेख में सतत् विकास ख़ास तौर से सामने आया है। अपनी कुशल पहल और लगातार प्रयासों से डॉ. वर्गा ने सब जगह ईश्वर के अधिकार से सम्बन्धित शिक्षा के लिये मित्रों को प्रेरित

किया है। इस विधान के व्यापक रूप से लागू होने के बाद के दशक में न्यासियों के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय बोर्ड अस्तित्व में लाये गये जो बढ़ी हुई संख्या में उप-न्यासियों और प्रतिनिधियों के कामो को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इस महान विधान का ज्ञान व्यापक रूप से बढ़ा है और सभी महाद्वीपों में मित्रों ने पूरी आस्था के साथ इसके प्रति अपना उत्साह दिखलाया है। न्यासी की यह आशा है कि यह आस्था उन लोगों के दिलों को छूयेगी जिन्होंने अब तक इस विधान के अनुपालन से प्राप्त होने वाले आशीषों का लाभ नहीं उठाया है।

लगभग दो साल पहले हमने विश्व केन्द्र स्थित भवनों और उद्यानों के समुचित ढंग से रख-रखाव के लिये आर्थिक सहयोग की ख़ास ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुये विश्व केन्द्र अक्षयनिधि कोष की स्थापना की घोषणा की थी। इस कोष में दान अभी तक उतना नहीं प्राप्त हो पाया है जितने की वार्षिक ज़रूरत है। इसलिये, हमने यह आवश्यक समझा कि ख़ास मदों के लिये प्राप्त दानराशि में से पचास लाख डॉलर का एक कोषपिण्ड (कॉरपस फंड) बनाया जाये जो मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिये निवेश आय का ज़रिया बन सके। अन्य क्षेत्रों में किये जाने वाले कार्यों को स्थगित कर हमने आवश्यक खर्चों को पूरा करने के लिये बहाई अन्तर्राष्ट्रीय कोष से धन निकाल कर ऐसा किया है, हालाँकि सामान्य परिस्थितियों में उन क्षेत्रों में भी काम किया जाना ज़रूरी था।

यह सूचित करते हुये हमें प्रसन्नता हो रही है कि सैंटिआगो में बनाये जाने वाले दक्षिण अमेरिका के मातृ मंदिर के लिये चिली की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा माँगे गये डिज़ाइन के उत्तर में दुनिया भर के आर्किटेक्ट और डिज़ाइनरों से 185 डिज़ाइन प्राप्त हुये हैं। चुने गये डिज़ाइन की घोषणा बाद में की जायेगी।

प्रिय मित्रगणः चारो ओर हो रही प्रगति के ठोस प्रमाण से कृतज्ञ, हम यह आशा करते हैं कि पाँच वर्षीय योजना के ढाँचे के अधीन आप द्वारा किये जा रहे समर्पित प्रयासों को सर्वोच्च स्वामी की सम्पुष्टि प्राप्त होगी - एक ऐसी योजना जो वर्तमान समय की ज़रूरतों को पूरा करने की दृष्टि से बनाई गई है। इसके लक्ष्य के प्रति आपकी दृढ़ता उन अन्तर्निहित शक्तियों से आपको विभूषित कर दे जो, आभा-सौन्दर्य की कृपा और प्रेरणा से, प्रत्येक देश में समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के काम को आवेग से भर दे।

हस्ताक्षरित : विश्व न्याय मंदिर